[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3440

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

''संगीत के प्रचार - प्रसार में संचार साधनों की भूमिका''

विधि नागर
शोधार्थी [कत्थक नृत्य]
म.ल.बा.शा.स्ना.क.महा., इंदौर, मध्यप्रदेश

आधुनिक काल में मानव जीवन से संबंधित हर क्षेत्र को नख से शिख तक प्रभावित करने वाले संचार माध्यमों को महिमा–मंडित करना, सूरज को दिया दिखाने जैसा होगा | यह वह माध्यम है जिसने वैश्वीकरण व आधुनिक विचार धारा से लबरेज समाज के साथ ही पुरातन विचारधारा, मान्यताओं व रीति- रिवाजों से सराबोर समाज को भी तह तक प्रभावित किया है | वर्तमान समय में संचार माध्यमों की, विशेषकर मीडिया की पहुंच और प्रभाव को देखते हुए ही एक फ्रेज़ ''मीडिया स्टेट'' का जन्म हुआ है | विशेषकर विश्व के ''ग्लोबल विलेज'' की परिकल्पना को प्राप्त करने में सबसे महत्वपूर्ण हाथ, इन्हीं संचार माध्यमों का है, इन्हीं की बदौलत हम कोसों दूर की क्या, विश्व के दूरस्थ छोर की खबरों, घटनाओं का उसी पल अवलोकन कर सकते है | जहां तक संगीत का सम्बन्ध है, यह सर्व विदित है कि अनेकों युगों, कालों, व परिस्तिथियों का सामना करते हुए यह अपने वर्तमान स्वरुप को प्राप्त हुआ है | समय की इसी सतत प्रवाहित धारा में कभी यह संक्रमित हुआ, तो कभी पल्लवित व सुशोभित | इसी धारा क्रम में आधुनिक संचार माध्यम भी इसे गहरे तक प्रभावित कर रहे है |

आचार्य शारंगदेव ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ ''संगीत रत्नाकर'' में कहा है -

''गीतं वादयं तथा नृत्य त्रयं संगीतमुच्यते''

- अर्थात् गायन, वादन, और नृत्य ये तीनों ही मिलकर संगीत कहे जाते हैं | संगीत, शास्त्र-सम्मत होने के साथ ही ताल–लय के नियमों से आबद्ध होता है | नृत्य मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है | नृत्य सहज, स्वाभाविक भावाभिव्यक्ति है | संगीत की चेतना द्वारा अंग संचालन करते हुए भावों की अभिव्यक्ति ही नृत्य हैं | संचार का शाब्दिक अर्थ है कि किसी व्यक्ति विशेष के विचार, विभिन्न विधाओं, घटनाक्रमों, विचारों, तथ्यों, साहित्य, कला, संस्कृति, भाषा आदि से संबंधित जानकारियों को दूसरे वर्ग, प्रान्त, देश, विदेश आदि तक पहुँचाना | जो माध्यम इस संवहन में सहायता प्रदान करते है वे संचार माध्यम कहलाते हैं | तकनीकी रूप से हम संचार माधयमों के इन प्रकारों को आत्मसात करते हैं – साहित्य, पत्र-पत्रिकाएं, रेडियो, डाक-तार, टेपरिकार्डर, दूरदर्शन, चलचित्र, छायाचित्र, वीडियोग्राफी, माइक, टेलीफोन, मोबाइल, कंप्यूटर तथा नवीनतम रूप इन्टरनेट, फैक्स और ई-मेल | बदलते समय व आधुनिकता के साथ आविष्कृत होते हुए संचार माध्यमों ने संगीत [गायन, वादन, नृत्य] के विकास के लिए अतुलनीय योगदान दिया है तथा संगीत अपने जिस नवीन व उच्चतर रूप में निखर कर वर्तमान में हमारे समक्ष सांस्कृतिक आधार के रूप में खड़ा है वह किसी अन्य के सहयोग से नहीं अपितु संचार माध्यमों के द्वारा ही संभव हुआ है |

साहित्य संगीतकला के विकास का प्रथम माध्यम है | विभिन्न छात्रों व शिष्यों को संगीत [गायन, वादन, नृत्य] का सैद्धांतिक व प्रायोगिक ज्ञान तथा संगीत के विभिन्न प्रकारों, घरानों, व गुरूओं की जानकारी साहित्य से ही प्राप्त होती है | डाक-तार को संगीत कार्यक्रमों के लिए उपयोग किया जाने लगा जिससे कि, आवश्यक सूचना जल्द व अधिक लोगों तक पहुँचने से संगीत को अधिक सफलता प्राप्त होने लगी | समाचार-पत्रों का प्रकाशन भी नृत्य के आयोजनों व नृत्याचार्यो के जीवन परिचय से नृत्य की दिशा में

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

कार्यरत लोगों को परिचित कराने में सार्थक सिद्ध हुए हैं | चलचित्र व छायाचित्र ने संगीत की विभिन्न शैलियों को प्रसिद्धि दिलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे संगीत की सभी प्रकार की शाखाएँ जन-सामान्य में प्रचलित हुई | नृत्य के प्रदर्शन को सुन्दर व प्रभावी बनाने हेतु टेप रिकार्डर के जरिये ही विभिन्न प्रकार की विशेष ध्वनियाँ ध्वनित की जाती हैं | प्रदर्शन का आकलन करना हो तो इसका श्रेष्ठ माध्यम है वीडियोग्राफी, जिसमें नर्तक, गायक अपने प्रदर्शन को देख सकता है व दूसरी लोककलाओं को संजोकर रख सकता है | कंप्यूटर में इन्टरनेट के माध्यम से किसी भी विषय की जानकारी प्राप्त की जा सकती है | बहुत से नर्तकों ने स्वयं की साइट्स रजिस्टर करवा रखी है, जिससे विभिन्न देशों की संस्कृतियों का आदान-प्रदान पूरे विश्व में हो रहा है | इससे हमारे लोक व शास्त्रीय संगीत का प्रसार व विकास बहुतायत से हो रहा है | विभिन्न ऐसे कलाकार जो किसी विशेष संस्थान से जुड़कर नृत्य सिखाना चाहते हैं, वे ई-मेल के द्वारा उन संस्थानों से संपर्क कर, प्रवेश प्रक्रिया पूर्ण कर नृत्य के छात्र – छात्रा बन जाते हैं | इससे यह कला परिपक्व होकर विकसित होती जा रही है | इन सभी माध्यमों के साथ-साथ दूरदर्शन, टेलीफ़ोन तथा नवीन उपकरण मोबाइल आदि का भी संगीत में सक्रिय योगदान है | इन माध्यमों से विशेष सूचनाएं देश व विदेश में अल्पावधि में पहुँचती हैं जो कि किसी भी कला के लिए बहुउपयोगी है | साथ ही लोक नृत्य व महोत्सवों में होने वाले विशेष नृत्यों की रिपोर्ट प्रसारित होने से नृत्य संबंधी सभी जानकारियां उपलब्ध होती हैं |

संचार माध्यमों की मदद से संगीत [गायन, वादन, नृत्य] ने अपने प्रचार–प्रसार की नई ऊँचाइयों को छुआ है | किसी भी कला को जन–साधारण में प्रचलित व परिचित करने के लिए संचार माध्यम अत्यंत महत्वपूर्ण हैं | संचार के विभिन्न माध्यम संगीत के क्षेत्र को विस्तृत बनाने, सशक्त बनाने व विकास करने में सहायक सिद्ध हुए हैं | विभिन्न माध्यमों ने अपनी - अपनी दिशा में नृत्य को पर्याप्त सहयोग प्रदान किया है जिससे संगीत [गायन, वादन, नृत्य] देश ही नहीं अपितु विदेशो में भी सराहा गया है | हमारी संस्कृति को अधिक सम्मान प्राप्त हुआ है, साथ ही हमारे कलाकारों को समय - समय पर विदेशो में प्रदर्शन हेतु आमंत्रित किया जाता है | यह सब तब संभव हुआ है जब इन संचार माध्यमों ने नृत्य की सुन्दर व वास्तविक स्थिति को सभी के समक्ष प्रस्तुत किया | यह संचार माध्यम ही है जिन्होनें संगीत [गायन, वादन, नृत्य] की सुन्दरता व वास्तविकता को जन–मानस के अंत: पटल पर अंकित कर दिया है | अत: कहा जा सकता है कि संगीतकला अपने जिस नवीन व परिष्कृत रूप में तराशी हुई नज़र आती है, उसमें सर्वाधिक योगदान संचार माध्यमों का है |

सन्दर्भ -

१. कथक नृत्य शिक्षा – डॉ. पुरु दाधीच
२. इन्टरनेट